Topic_____ Date_____

गुरु तेग बहादुर का जीवन परिचय

भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अनेक धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओ से मिलकर बनी है।
धार्मिक और सांस्कृतिक तौर पर अत्याधिक भिन्नता होने के बावजूद भारत एक ऐसा राष्ट्र है जहां सभी धर्मो को बराबर मान - सम्मान और अधिकार दिए गए है लेकिन पहले ऐसा नही था क्योंकि तब अधिकार केवल जंग और शहादत पर ही निर्भर होते थे। यही वजह है कि यहां समय - समय पर विभिन्न धर्मो के लोग द्वारा आक्रमण और जीत यर्ज की जाती रही। जब धर्म के नाम पर मरने मिटने की बात आती है तो सिख समुदाय का नाम हमेशा ही सम्मान के साथ लिया जाता है। सिखों के नौवे गुरु, गुरु तेग बहादुर ऐसी ही एक शख्सियत है जिन्होने सिख धर्म के सम्मान को बरकरार रखने के लिए अपनी जान की भी को फरवाह नही की। चलिए गुरु तेग बहादुर जी के जीवन के बारे मे जानते है।

जन्म और बचपन

गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 1 अप्रैल 1621 ई. को अमृतसर मे श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी और माता नानकी जी के घर हुआ। उनके बचपन का नाम त्यागमल था। गुरु तेग बहादुर जी बचपन से ही संत स्वरुप, गंभीर और निर्भय स्वभाव के थे। 1634 ई. मे वे अपने माता - पिता के साथ करतारपुर आ गए। यहां अपने माता - पिता के साथ मिलकर करतारपुर के युद्ध मे अपनी तलवार के खूब जौहर

Topic _____ Date _____

परिवार। उनकी तेग (तलवार) की बहादुरी देख उनके पिता जी ने उनका नाम त्याग मल से तेग बहादुर रख दिया। हर गोबिंद साहिब जी गुरु तेग बहादुर से काफी प्रेम करते थे। लोग हमेशा कहा करते थे, वह (तेग बहादुर) जन्म से ही दिव्य पहचान के साथ आए हैं गुरु हरगोबिंद जानते थे कि तेग बहादुर बहुत ही बहादुर व परोपकारी होंगे इसलिए उन्होंने उनके लिए हर तरह के आवश्यक प्रशिक्षण पर जोर दिया। उन्हें साक्षरता के लिए भाई गुरदास जी को सौंप दिया इसके बाद उन्हें ज्ञान और अन्य सद्गुणों के महत्व को सिखने के लिए बाबा बुढा जी के पास भेजा गया। इसके अलावा तेग बहादुर जी ने बड़ी ही गहराई से गुरुबानी का अध्ययन किया। घुड़सवारी भी अच्छी थी। गुरु हरगोबिंद जी अपने बालक के लिए कहा करते थे कि एक दिन हमारा बेटा निश्चित रूप से तेग चलाने में अमीर होगा और जब वह बड़े हुए तो उन्होंने ऐसा ही किया, भक्ति व शक्ति दोनो उनके पास रही।

गुरु तेगबहादुर जी सिखों के 9वें गुरु बने। उनके द्वारा रचना की हुई बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। गुरु जी को 'हिंद की चादर' भी कहते हैं क्योंकि उन्होंने हिंदुस्तान मे हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दिया था।

विवाह

उनका विवाह श्री लाल चंद की सुपुत्री माता गुजरी के साथ 1633 मे हुआ।

Topic: ..... Date: ..... Page No: .....

गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएँ व यात्राएँ

"सिखो के नवम संत शिरोमणि
एकता, सेवा, भाईचारे से भरे
मानवीय धर्म व वैचारिक स्वतंत्रता के रक्षक
हिंद-दी-चादर सतगुरु तेग बहादुर जी॥"

गुरु तेग बहादुर जी द्वारा विभिन्न शिक्षाएँ दी गयी जिन्होंने एक बड़े जनसमूह को प्रभावित किया। उन्होंने बाणी के 15 रागों मे 116 शब्द श्री गुरु ग्रंथ साहिब मे संकलित किया। उनके द्वारा धर्म की रक्षा अर्थात् धर्म सर्वोपरि है पर अपने अत्यधिक उपदेश दिए। गुरु तेग बहादुर जी द्वारा एकता, व भाईचारे का पाठ पढ़ाया गया। गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाओं का वर्तमान समय मे अत्यधिक महत्त्व है। बाल्यावस्था से ही उन्होंने सहन-शीलता, मधुरता, सौम्यता की शिक्षाएँ जन-जन संचरित की।

अत: उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते है कि गुरु तेग बहादुर एक महान व्यक्ति थे जोकि अपनी शिक्षाओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। वर्तमान समय मे भी गुरु तेग बहादुर का नाम स्वर्णिम अक्षरों मे लिखा जाता है।

"तेग बहादुर एक महान वीर
जिसकी शिक्षा से जन-जन परिचित
ऐसे है क्रांतिकारी वीर।"

GOOD WRITE
A Mark of Quality

Teacher Sign. .....

Title _____ Date _____

Page _____

गुरुगद्दी संभालना

सिखों के आठवे गुरु 'गुरु हरि कृष्ण जी' के ज्योति ज्योत समा जाने से पहले वो सब भक्तो को 'बाबा बकाला' कह कर आप को गुरुगद्दी सौंप गए थे। सिखों के नौवें गुरु हुए और उन्हें 44 साल की उम्र मे गुरुगद्दी पर विराजमान हुए।

गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी

विश्व इतिहास मे धर्म और मानवीय मूल्यों, आदर्शों एंव सिद्धांत की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में श्री गुरु तेग बहादुर जी का स्थान अद्वितीय है। सन् 1675 मे धर्म की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग बहादुर जी को ने अपना बलिदान दिया था। मुग्ल बादशाह औरंगजेब ने श्री गुरु तेग बहादुर जी को मौत की सजा सुनाई थी, क्योंकि श्री गुरु तेग बहादुर जी ने इस्लाम धर्म को अपनाने से इंकार कर दिया था। उन्हें सबसे निस्वार्थ शहीद माना जाता है और उनकी शहादत को हर साल 24 नवंबर को गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस के रुप मे मनाया जाता है।

"सदियो पहले एक आये थे ऐसे
जो धर्म पताका (झंडा) फहरा गये,
दुनिया को धर्म का पाठ पढ़ा कर,
धर्म की ही खातिर, वह खुद की बलि चढ़ा
गये ॥"

CLASSTIME